परिशिष्ट

परिशिष्ट - 1

2 मायादेवीनगर, जलगांव - 425-002/0257-2261967

17/7/06

सुश्री रुपाली चौहान,

शुभाशीष, आपका दि. 10 का पत्र 14 को ही मिला। खेद है मेरे पास 'बचाओ मुझे डाक्टरों से बचाओ' पर कोई समीक्षात्मक सामग्री नहीं है। उन दिनों की जिन पत्रिकाओं में भी छपी हो उसकी सूची भी मेरे पास नहीं और होती भी तो मैं नहीं समझता, अब इतने वर्षों बाद वे हाथ लगती।

वास्तव में ये एकांकी जैसे भी हैं, इसकी इनके दोषों सहित आपको ही समीक्षा करनी है। अनोखेलाल वाले एकांकी वाच्य अधिक हो गए हैं, संवादों में गतिमानता नहीं है। अत: इनकी अभिनयात्मकता अत्यंत संदिग्ध है। हाँ, जहाँ तक प्रसंगों की बात है, उनके हास्य में आज भी जीवंतता है। फूहड़ता कहीं नहीं मिलेगी।

कहने का तात्पर्य यही कि आपको ही प्रसंग, संवाद, भाषा, अभिनय और प्रभाव को सम्मुख रख इन एकांकियों पर मुक्त होकर लिखना है।

इन एकांकियों में मंचन की दृष्टि से संकलन त्रय का खयाल रखा गया है।

आपने प्रश्न किए होते तो अपने बारे में और अधिक बता सकता।

लेखन को विराम नहीं दिया है। 106 ललित निबंध लिखे हैं, जिनके आगे तीन संग्रह आयेंगे - 'देखा जाएगा', 'अरण्य कांड', 'बेचारा सूरज! अरे उसे तुम उगने दो!'

'बिखरे पन्ने' आत्मकथा लिखी है, पर इसे अभी छपने नहीं दूँगा।

इन चार-पाँच वर्षों में निम्न पुस्तकें आई हैं।

राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली से व्यंग्य के चार संग्रह -

कट आउट, तेरहवाँ डिनर - 2002 में

जंगल में, पराजय की जुबली - 2004 में

विकास प्रकाशन, कानपुर से

'आखरकार' व्यंग्य संग्रह - 2004

पंचशील प्रकाशन, जयपुर से

'मर्जी से पैदा भयो' - 2006 (व्यंग्य संग्रह)

पिछले वर्ष (2005) में 'जहाँ देवता मरते हैं' नामक व्यंग्य उपन्यास लिखा है। इसका अँग्रेजी अनुवाद पहले छपेगा और अमरीका में छपेगा। वर्तमान में अँग्रेजी अनुवाद रतलाम (म.प्र.) के एक प्राध्यापक कर रहे हैं। विश्वास है यह उपन्यास दिसंबर तक छप जाएगा और बेस्ट सेलर सिद्ध होगा।

आपको और कुछ जानना शेष रह गया हो तो वैसा लिख भेजें। प्रश्न द्वारा जानकारी प्राप्त करें।

आपके निर्देशक डॉ. मोहन जाधव को मेरा नमस्कार कहें।

आपका लेखन कार्य दिसंबर तक पूर्ण हो जाए यहीं कामना करता हूँ।

शंकर पुणतांबेकर

फोटो पासपोर्ट साईज रख रहा हूँ।

155

2 माधवश्रीनगर, जलगांव 425-002 / 0257-2261967
17.7.06

सुश्री स्वप्नाली चौहान,

शुभाशीष, आपका दि 10 का पत्र 14 को मिला।

खेद है मेरे पास 'कथाओं से उभरती कथाएँ' पर कोई समीक्षात्मक सामग्री नहीं है। उन दिनों की जिन पत्रिकाओं में भी छपी हो उनकी सूचना भी मेरे पास नहीं, और होती भी तो मैं नहीं समझता, अब इतने वर्षों बाद वे हाथ लगतीं।

वास्तव में ये एकांकी जैसी ही हैं, इनकी स्वयं [illegible] आपका ही समीक्षा 'कथा' ~~[illegible]~~ अन्तर्वस्तु वाले एकांकी [illegible] अधिक हो गये हैं, संवादों में नाटकीयता नहीं है। अत: इनका अभिनयात्मकता संदिग्ध है। हाँ, जहाँ तक प्रभाव की बात है, इनकी [illegible] में बात की नवीनता है। [illegible] कहीं नहीं मिलेगा।

कहने का तात्पर्य यही कि आपको ही संवाद-भाषा-अभिनय और प्रभाव को समझकर इन एकांकियों पर [illegible] होकर लिखना है।

इन एकांकियों में ~~अभिनय~~ मंच की सम्भावनाओं से अधिक कथ्य का ख्याल रखा ~~गया~~ गया है।

आपने प्रश्न किये होते तो अपनी बात में और अधिक कह पाता।

156

लेखन को विराम नहीं दिया है। 106 कविता लिखी हैं जिनमें आज तीन संग्रह आयेंगे — दुआ मांगेगा, अरण्य कांड, बंजारे स्वप्न। और उनमें कुछ छपने हैं।

'मेरे पन्ने' आत्मकथा लिखी है, पर इसे अभी छपने नहीं दूँगा।

इन तीन-चार वर्षों में निम्न पुस्तकें आयी हैं।

वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर से प्रबंध के बाद संग्रह —
कहे आउट, संवेदना विचार — ~~2005~~ 2002 में
जंगल में, परायाय की पुकार — 2004 में।

विश्वास प्रकाशन कानपुर से
आखर सार प्रबंध संग्रह — 2004

पंचशील प्रकाशन जयपुर से
मनों के पैरा सही — 2006 प्रबंध संग्रह

सितम्बर (2005) 'जहाँ देखा भारत है' नामक प्रबंध उपन्यास लिखा है। इसका अंग्रेजी अनुवाद पहले छपेगा और अमेरिका में छपेगा। वर्तमान में अंग्रेजी अनुवाद रिलायस (प.स.) के एक प्राध्यापक कर रहे हैं। विश्वास है यह उपन्यास विश्व तक छप जायेगा और बेस्ट सेलर सिद्ध होगा।

157

आपको और कुछ जानना शेष रह गया हो तो वैसा लिखित भेजें। ईमेल द्वारा जानकारी प्राप्त करें।

आपके निदेशक डॉ. मोहन नारायण को मेरा नमस्कार कहें।

आपका लेखन कार्य दिसंबर तक पूर्ण हो जाए यही कामना करता हूँ।

मोटे पाठ वाली लाइनें मैंने लिखी हैं।

परिशिष्ट - 2

(डॉ. शंकर पुणतांबेकर जी से प्रश्नावली के प्राप्त उत्तर)

1. आपके लेखन में अभावग्रस्त जीवन के चित्रण का अधिक्य है, इसका क्या कारण है?

● लेखक जनता का वह प्रतिनिधि होता है जिसके हाथ में माइक नहीं लेखनी होती है। लेखक जनता का सच्चा प्रतिनिधि तभी बन सकता है, जब वह गरीबों, अभावग्रस्तों की वाणी बने। हमारा देश स्वतंत्र है, विकास की चमक-दमक भी हमें यत्र-तत्र दिखाई देती है, किंतु स्वतंत्रता के 55 वर्ष के बाद भी देश की 85 प्रतिशत जनता अभावग्रस्त जीवन जी रही है । शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, रोजगार के साधन मात्र विशिष्ट वर्ग को ही प्राप्त हैं। इस दशा में एक जागरूक नागरिक का कर्तव्य बन जाता है कि देखे इस पिछड़ी और अभावग्रस्त जनता को न्याय मिलें। स्वस्थ-सुदृढ़ जीवन यापन के साधन उसे प्राप्त हों। एक जिम्मेदार लेखक इसी जागरूक नागरिक की भूमिका अपनाता है। मैंने भी यही प्रयास अपने लेखन में किया है। मेरे जीवन का आरंभिक काल एक देहात में बीता जो मेरी जन्मभूमि था। इस देहात में रहते मैंने लोगों की गरीबी और अभावग्रस्तता को निकट से देखा। हो सकता है बाल्यकाल के ये अमिट चित्र मेरे लेखन में प्रतिबिंबित होते हों।

2. आपको लेखन की ओर आकर्षित करनेवाली बातें कौन सी हैं?

● मैं समझता हूँ लेखक आरंभ में खेल-खेल में लिखता है, शौक में लिखता है, छपने के आकर्षण में लिखता है। इस लेखन में भावुकता का अधिक्य होता है, पढ़े हुए का रूचि के अनुरूप अनुकरण। इस लेखन में अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों में कच्चापन होता है।

खेल-खेल में से बाहर आनेवाला वही लेखक टिका रहता है, जिसकी निरीक्षण शक्ति पैनी है। इस निरीक्षण की प्रतिक्रिया भाव में विचारात्मक और भाषा में बिंबात्मक-कल्पनात्मक हो।

इस प्रतिक्रिया की जिसे अनुभूति भी कहा जा सकता है। सशक्त और कलात्मक अभिव्यक्ति की दिशा अध्ययन से अच्छी पुस्तकों के अध्ययन से प्राप्त होती है।

अंतत: यह अभिव्यक्ति भावात्मक नहीं रह जाती, विचारात्मक बन जाती है। यह विचारात्मकता समाज और युग के प्रति दायित्व लिए रहती है।

मेरी लेखन यात्रा बहुत कुछ ऐसी ही रही है। संक्षेप में अच्छी पुस्तकें और समाज युग के प्रति दायित्व ने मुझे लेखन की ओर आकर्षित किया यही मैं कहूँगा।

3. आपकी रचनाओं में से आपको कौन सी रचना अधिक पसंद है?

● वास्तव में इधर की रचनाओं में ही मेरी सही अर्थ में अच्छी रचनाएँ हैं। उनकी संख्या भी अधिक है। इन रचनाओं में विविधता भी अधिक दिखाई देती है। इस दशा में यह बताना कुछ मुश्किल ही है कि मुझे कौन सी रचना अधिक पसंद है।

इस दस-बारह वर्षों में मेरे आठ व्यंग्य-संग्रह आए, प्रत्येक संग्रह में 125 रचनाएँ हैं। संग्रह फूटकर रचनाओं के होते हैं। कोई संग्रह ऐसा नहीं होता कि जिसमें अच्छी-अच्छी ही अथवा बुरी-बुरी ही (अथवा कम अच्छी) रचनाएँ हो। अत: इनमें से चुनाव कठिन है।

अच्छी रचनाओं का उल्लेख करने पर आऊँ तो 'तीन व्यंग्य नाटक' पुस्तक का निर्देश किया जा सकता है। इसमें तीन नाटक हैं। इस तीन नाटकों में भी 'रावण तुम बाहर आओ' नाटक मुझे अच्छा लगता है।

व्यंग्य में शरद जोशी को छोड़ किसी ने खास व्यंग्य नाटक नहीं दिया है। मैंने कोशिश की है। व्यंग्य नाटकों के अभाव की दृष्टि से मैं 'तीन व्यंग्य नाटक' पुस्तक को विशेष मानता हूँ।

साथ ही व्यंग्य में नए प्रयोग के संदर्भ में मैं 'व्यंग्य अमरकोश' का भी नाम लेना चाहूँगा। यह पुस्तक ऐसी बेजोड है जो हिंदी में तो क्या किसी भी भारतीय भाषा में नहीं लिखी गई है।

4. आपने अधिकांशत: व्यंग्य-लेखन ही किया है, इसका क्या कारण है?

● किसी भी लेखक की विधा उसकी प्रवृत्ति पर निर्भर करती है। कविता, निबंध, कहानी, नाटक, उपन्यास जिन्हें हम विधा कहते हैं वास्तव में साहित्यकार की प्रवृत्तियाँ हैं और प्रवृत्तियाँ प्रकृति प्रदत्त होती हैं।

व्यंग्य को आज भी अधिकांश आलोचक और साहित्यकार विधा मानने को तैयार नहीं। कहते हैं व्यंग्य विधा नहीं प्रवृत्ति है। मेरा यह मानना है कि यदि व्यंग्य प्रवृत्ति है ओ अन्य विधाएँ भी प्रवृत्ति ही हैं। व्यंग्य निबंध, कहानी, नाटक, उपन्यास, विधाओं में लिखा जाता है, सो इसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं ऐसा तर्क दिया जाता

है। इस तर्क का प्रतितर्क यह है कि निबंध का विवरण, नाटक के संवाद, उपन्यास का विस्तार जीवनी में भी होता है। इसलिए जीवनी क्या स्वतंत्र विधा नहीं है? किसी भी एक विधा में अन्य विधाओं के तत्त्व कम-अधिक मात्रा में आते ही हैं। फिर कोई भी व्यंग्य निरा कहानी, निबंध, उपन्यास नहीं होता। इसमें ये विधाएँ गड्डमड्ड रूप में विद्यमान रहती हैं।

जिस लेखक में विडंबना की तीव्र आघातात्मक प्रतिक्रिया होती है तो वह सामान्यत: व्यंग्यकार होता है। हो सकता है यह प्रकृति मेरी हो।

5. आप-अपने मित्र-परिचितों के संबंध में क्या कहना चाहेंगे?

● मेरे मित्र कम ही हैं। जहाँ तक परिचितों का प्रश्न है, अध्यापक के नाते छात्रों के रूप में और लेखक के नाते पाठक, लेखक, संपादक, प्रकाशक और समीक्षकों के रूप में दूर-दूर तक फैले हुए हैं।

निकटवर्ती मित्र और परिचित कम ही हैं। बढ़ती उम्र के साथ एक अंतर पैदा हो जाता है और यह आदर के रूप में होता है, फिर मैं अध्यापक रहा। इस स्थिति में भी कुछ होते हैं जिनमें मनुष्य जोडने की प्रवृत्ति होती है और दु:ख के साथ कहना पड़ता है कि वह मेरी नहीं है।

मेरे घनिष्ठ मित्र और परिचित कोई हैं तो वे हैं पुस्तकें। तथापि विदिशा में मध्यप्रदेश के इस जिला स्थान में जहाँ मैंने तेरह वर्ष नौकरी की मेरे तीन घनिष्ठ मित्र रहे, जिनमें से एक की पिछले वर्ष मृत्यू हो गई।

यहाँ जलगाँव में तेजपाल चौधरी और सुधीर ओखदे मित्र कहे जा सकते हैं यद्यपि ये लोग मुझे गुरू मानते हैं।

तेजपाल चौधरी भाषाशास्त्र के पीएच्.डी. हैं, निवृत्त हिंदी प्राध्यापक हैं। सुधीर ओखदे 40-45 की उम्र के हैं, आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिकारी हैं। हम जब बैठते हैं तो साहित्यिक गपशप के साथ दुनियाँ-भर की और बातें भी करते हैं।

परिचितों के बारे में क्या कहूँ, उम्र का लाभ उठाकर मैं इनका श्रद्धापात्र हूँ।

शंकर पुणतांबेकर

29.7.06

प्र. आपके लेखन में अभावग्रस्त जीवन के चित्रण की अधिकता है, कारण?

लेखक जनता का वह प्रतिनिधि होता है, जिसके हाथ में चाबुक नहीं लेखनी होती है। लेखक जनता का सच्चा प्रतिनिधि तभी बन सकता है जब वह गरीबों-अभावग्रस्तों की वाणी बने। हमारा देश स्वतंत्र है, विकास की चमक-दमक भी खूब चमचम दिखायी देती है, किन्तु स्वतंत्रता के 53 वर्ष के बाद भी देश की 85 प्रतिशत जनता अभावग्रस्त जीवन जी रही है। शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, रोजगार के साधन मात्र विशिष्ट वर्ग को ही प्राप्त हैं। इस दशा में एक जागरूक नागरिक का कर्तव्य बन जाता है कि देश के पिछड़ी और अभावग्रस्त जनता को न्याय मिले। रोटी-कपड़ा जैसे जीवन यापन के साधन उसे प्राप्त हों। एक जिम्मेदार लेखक इसी जागरूक-नागरिक की भूमिका अपनाता है। मैंने भी यही प्रयास अपने लेखन में किया है। मेरे जीवन का आरंभिक काल एक देहात में बीता जो मेरी जन्मभूमि था। इस देहात में रहते मैंने लोगों की गरीबी और अभावग्रस्तता को निकट से देखा। हो सकता है बाल्यकाल के वे अविस्मरणीय क्षण मेरे लेखन में प्रतिबिंबित होते रहे हों।

प्र. आपको लेखन की ओर आकर्षित करने वाली बातें कौनसी हैं?

मैं समझता हूँ लेखक आरंभ में खेल-खेल में लिखता है, शौक में लिखता है, [illegible] के आकर्षण में लिखता है। इस लेखन में भावुकता का आधिक्य होता है, यह दूसरे की रचनाओं का अनुरूप अनुकरण। इस लेखन में अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों में कच्चापन होता है।

खेल-खेल के इस दौर से बाहर आने वाला वही लेखक टिका रहता है जिसकी चिंतन शक्ति पैनी है। इस चिंतन की प्रक्रिया भाव में क्रियात्मक और भाषा में विचारात्मक-कल्पनात्मक होती है।

इस प्रक्रिया को जिसे अनुभूति भी कहा जा सकता है सशक्त और कलात्मक अभिव्यक्ति की दिशा अध्ययन से - अच्छी पुस्तकों के अध्ययन से प्राप्त होती है।

अंततः यह अभिव्यक्ति भावात्मक नहीं रह जाती - क्रियात्मक बन जाती है। यह क्रियात्मकता समाज और युग के प्रति दायित्व लिये रहती है।

मेरी लेखन-यात्रा बहुत कुछ ऐसी ही रही है। बचपन में अच्छी पुस्तकें और समाज-और युग के प्रति दायित्व ने मुझे लेखन की ओर आकर्षित किया यही मैं कहूँगा।

प्र. आपकी इधर की रचनाओं में आपको कौनसी रचना अधिक पसंद है?

वास्तव में इधर की रचनाओं में तो मेरी सही अर्थ में, अच्छी रचनाएँ हैं, उनकी संख्या भी अधिक है। इन रचनाओं में विविधता भी [illegible] है। इस दशा में यह बताना कुछ मुश्किल ही है कि मुझे कौनसी रचना अधिक पसंद है।

इन पच्चीस वर्षों में मेरे आठ व्यंग्य-संग्रह आये, प्रत्येक संग्रह में 125 रचनाएँ हैं। संग्रह फुटकर रचनाओं के होते हैं। कोई संग्रह ऐसा नहीं होता कि जिसमें अच्छी-अच्छी ही अथवा बुरी-बुरी ही (अथवा कम अच्छी) रचनाएँ हों।

अतः इनमें से चुनाव कठिन है।

अच्छी रचना का उल्लेख करने पर आऊँ तो 'तीन व्यंग्य नाटक' पुस्तक का निर्देश किया जा सकता है। इसमें तीन नाटक हैं। इन तीन नाटकों में भी 'सबका दुख बाहर आओ' नाटक मुझे अच्छा लगता है।

व्यंग्य में शरद जोशी को छोड़ किसी ने खास व्यंग्य नाटक नहीं दिया है। मैंने कोशिश की है। व्यंग्य नाटकों के अभाव की हालत से मैं 'तीन व्यंग्य नाटक' पुस्तक को विशेष मानता हूँ।

साथ ही, व्यंग्य में नये प्रयोग के संदर्भ में मैं 'व्यंग्य अमरकोश' का भी नाम लेना चाहूँगा। यह पुस्तक ऐसी कृति है जो हिन्दी में तो क्या किसी भी भारतीय भाषा में नहीं लिखी गयी है।

<u>आपने अधिकांशतः व्यंग्य-लेखन ही किया है, इसका क्या कारण है?</u>

किसी भी लेखक की विधा उसकी प्रकृति पर निर्भर करती है। कविता, निबंध, कहानी, नाटक, उपन्यास जिन्हें हम विधा कहते हैं वास्तव में साहित्यकार की प्रवृत्तियाँ हैं। और यह प्रवृत्ति प्रकृति-प्रदत्त होती है।

व्यंग्य को आज भी अधिकांश आलोचक और साहित्यकार विधा मानने को तैयार नहीं। कहते हैं, व्यंग्य विधा नहीं प्रवृत्ति है। मेरा मानना है कि यदि व्यंग्य प्रवृत्ति है तो अन्य विधाएँ भी प्रवृत्ति ही हैं। व्यंग्य निबंध-कहानी-नाटक-उपन्यास विधाओं में लिखा जाता है, तो इसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं ऐसा तर्क दिया जाता है। इस तर्क का प्रतितर्क यह है कि निबंध का विवरण, नाटक के संवाद, उपन्यास का विस्तार कविता में भी होता है, इसलिए कविता क्या स्वतंत्र विधा नहीं है? किसी भी एक विधा में अन्य विधाओं के तत्व कम-अधिक मात्रा में आते ही हैं। फिर कोई भी व्यंग्य निरा कहानी-निबंध-उपन्यास नहीं होता। इसमें ये विधाएँ गड्डमड्ड रूप में विद्यमान रहती हैं।

जिस लेखक में ~~[illegible]~~ विडम्बनाओं की तीव्र ~~[illegible]~~ आघात के प्रति प्रतिक्रिया होती है तो वह सामान्यतः व्यंग्यकार होता है। हो सकता है यह प्रकृति मेरी हो।

<u>आप अपने मित्र-परिचितों के सम्बन्ध में क्या कहना चाहेंगे?</u>

मेरे मित्र कम ही हैं। जहाँ तक परिचितों का प्रश्न है, अध्यापक के नाते छात्रों के रूप में और लेखक के नाते पाठक-लेखक-संपादक-प्रकाशक और समीक्षकों के रूप में दूर-दूर तक फैले हुए हैं।

निकटवर्ती मित्र-और परिचित कम ही हैं। बढ़ती उम्र के साथ एक अंतर पैदा हो जाता है और वह आदर के रूप में होता है, फिर मैं अध्यापक रहा।

इस स्थिति में भी कुछ होते हैं जिनसे पुत्रवत् जुड़ने की प्रतीति होती है और उनके साथ कहना पड़ता है कि वह मेरी नहीं है।

मेरे घनिष्ठ मित्र और परिचित कोई हैं तो वे हैं पुस्तकें।

तथापि विदिशा में — मध्यप्रदेश के एक जिला स्थान में जहाँ मैंने तेरह वर्ष नौकरी की, मेरे तीन घनिष्ठ मित्र रहे, जिनमें से एक की पिछले वर्ष मृत्यु हो गई।

यहाँ जलगांव में नंदलाल चौधरी और सुधीर आरवदे मित्र कहे जा सकते हैं यद्यपि वे लोग मुझे गुरु मानते हैं।

नंदलाल चौधरी भाषाशास्त्र के पंडित हैं, निवृत्त हिंदी प्राध्यापक हैं। सुधीर आरवदे 40-45 की उम्र के हैं, आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिकारी हैं। ये लोग बैठते हैं तो साहित्यिक गपशप के साथ दुनिया-भर की और बातें भी करते हैं।

परिचितों के बारे में क्या कहूँ, उन का लाभ उठाने में हमेशा असमर्थ हूँ।

[signature]
29.7.06

परिशिष्ट - 3

डॉ. सुरेश माहेश्वरी
एम्.ए.,पीएच्.डी.,डी.लिट.
आचार्य, डी.लिट.(मानद)

अध्यक्ष : स्नातकोत्तर अध्ययन अनुसंधान केंद्र, प्रताप महाविद्यालय, अमलनेर. ☎ (02587) 223101
फैक्स : 02587-223101

निवास : गिलडा प्रोविजन, बाजार पेठ, अमलनेर 425 401 ☎ (02587) 222181, 222201

15-11-2006

चि. रूपाली चव्हाण,

शुभाशीष।

7 नवंबर का पत्र मिला। एम्.फिल. कर रही हो बधाई। लघु शोध-प्रबंध भी लगभग तैयार हो गया। बधाई। बंधुवर डॉ. मोहन जाधव जी के कुशल मार्गदर्शन में आप एक अच्छे विषय पर काम कर रही है। यशस्वी हों।

इस प्रबंध में केवल 'एकांकी' नाटकों पर ही विचार-विवेचन हो। जिसमें विषय का गहन अध्ययन और निष्कर्ष पर पहुँचने में सुविधा, आसानी होती है। मंचीयता, पात्र योजना, संवाद, प्रसंगोद्भावना बिंदूओं पर चर्चा करें तो आपका चौथा अध्याय बढ़िया हो सकता है। पाँचवे अध्याय में डॉ. शंकर पुणतांबेकर जी का एकांकी साहित्य में प्रदेय पर विचार करते समय डॉ. गिरीराज शरण अग्रवाल की पुस्तक 'हिंदी के हास्य-व्यंग्य एकांकी' का आधार लेते हुए पुणतांबेकर जी के वैशिष्ट्य को बताया जा सकता है। ··· एक व्यंग्य यात्रा में डॉ. चंदूलाल दुबे का आलेख, आपको उपयोगी सिद्ध होगा। आपके मार्गदर्शक डॉ. जाधव जी आपको मदद करेंगे ही। और कोई अड़चन हो तो लिखें।

अब रही आपके प्रश्नों की बात - संक्षेप में उत्तर इस प्रकार हैं -

1) पुणतांबेकर जी हिंदी के लब्ध प्रतिष्ठित व्यंग्यकार हैं। उन्होंने अपनी प्रारंभिक र रचनाओं में हास्य की मदद भी ली है। समाज की विसंगतियों, विद्रूपताओं पर विदग्ध शैली में मारक और प्रहारक सृजन साहित्य की सभी विधाओं को शैली रूप में ग्रहण कर हास्य-व्यंग्य का सृजन किया है। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, लतीफ घोंघी के बाद पुणतांबेकर जी का नाम आता है। वे व्यंग्य के पांडव हैं।

2) उनका हास्य व्यंग्य सोद्देश्य है। महज मनोरंजन और शब्दच्छल को लिए नहीं है। चेतना को झकझोर कर जो चल रहा है को तोडकर नवीन सुसंगत का निर्माण वे कलम रूपी पिस्तोल से शब्द की गोली से करते हैं। सुधार का दृष्टिकोण गुरू की तरह वे चोट में रखते हैं।

3) हास्य-व्यंग्य का जन्म तीन तत्त्वों से होता है। 1. असंगति 2. शिल्प 3. प्रहार, प्रभाव। एकांकी के सभी तत्वों में इनका निर्वाह क्या प्राणतत्त्व के रूप में हुआ है? इस बात को आधार बनाकर विवेचन करना होगा।

4) भूख हड़ताल, प्रेत का बयान, तीन व्यंग्य नाटक, बचाओ मुझे कवियों से बचाओ आदि रचनाएँ ही नाट्य विधा की है। आप बचाओ, मुझे कवियों से का ही विशेष रूप से आधार बनाए। आपके द्वारा उल्लेखित अन्य रचनाएँ नाटक नहीं हैं। वे निबंध, कहानी आदि रूपों की रचनाएँ हैं।

यदि और कोई अडचन, जानकारी, संदर्भ की हो तो पत्र, फोन से संपर्क किया जा सकता है।

सब से यथायोग्य।

डॉ. सुरेश माहेश्वरी

डॉ. सुरेश माहेश्वरी
एम.ए., पीएच.डी., डी.लिट्.
आचार्य, डी.लिट्. (मानद)

अध्यक्ष : स्नातकोत्तर अध्ययन अनुसंधान केन्द्र, प्रताप महाविद्यालय, अमलनेर ☎ (02587) 223101 फैक्स : 02587 - 223101

निवास : गिलडा प्रोविजन, बाजार पेठ, अमलनेर 425 401 ☎ (02587) 222181, 222201

१५.११.२००६.

चि० रूपाली चव्हाण.

शुभाशीष।

७ नवंबर का पत्र मिला। एम०फिल० कर रही हो बधाई। लघु शोध प्रबंध भी लगभग तैयार हो गया। बधाई। बंधुवर डॉ० मोहन जाधव जी के कुशल मार्गदर्शन में आप एक अच्छे विषय पर काम कर रही हो। यशस्वी हों।

इस प्रबंध में केवल 'एकांकी' नाटकों पर ही विचार-विवेचन हो जिससे विषय का गहन अध्ययन और निष्कर्ष पर पहुँचने में सुविधा-आसानी होती है। - मंचीयता - पात्र योजना - संवाद - प्रसंगोद्भावना' बिंदुओं पर चर्चा करें तो आपका चौथा अध्याय बढ़िया हो सकता है। पाँचवे अध्याय में डॉ० शंकर पुणतांबेकर जी की एकांकी साहित्य में प्रदेय पर विचार करते समय डॉ० गिरिराज शरण अग्रवाल की पुस्तक 'हिन्दी के हास्य-व्यंग्य एकांकी' पुस्तक का आधार लेते हुए पुणतांबेकर जी के व्यक्तित्व को बताया जा सकता है।... 'एक व्यंग्य यात्रा' में डॉ० चंद्रकान्त दुबे' का आलेख आपको उपयोगी सिद्ध होगा। आपके मार्गदर्शक डॉ० जाधव जी आपको मदद करेंगे ही। और कोई अड़चन हो तो लिखें।

अब रही आपके प्रश्नों की बात। संक्षेप में उत्तर इस प्रकार हैं-

(1) पुणतांबेकर जी हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठित व्यंग्यकार हैं। उन्होंने अपनी प्रारंभिक रचनाओं में हास्य की मदद भी ली है। समाज की विसंगतियों, विद्रूपताओं पर साहित्य की सभी विधाओं को लेकर विविध शैली में मारक और प्रहारक सृजन में गहरा कर हास्य व्यंग्य का सृजन किया है। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, लतीफ घोंघी के बाद पुणतांबेकर जी का नाम आता है। वे व्यंग्य के पोषक हैं।

(2) उनका हास्य व्यंग्य सोद्देश्य है। मात्र मनोरंजन और शब्द खिलवाड़ को लिए नहीं है। चेतना को झकझोरकर जो चल रहा है को तोड़कर नवीन सुसंगत का निर्माण वे कलम रूपी पिस्तौल से शब्द की गोली से करते हैं। सुधार का दृष्टिकोण गुरु की तरह वे चोट में रखते हैं।

(3) हास्य-व्यंग्य का सृजन तीन तत्वों से होता है। १. असंगति २. शिल्प ३. प्रहार-क्षमता. एकांकी के सभी तत्वों में इनका निर्वाह तथा प्राणतत्व के रूप में हुआ है। इस बात को आधार बनाकर विवेचन करना होगा।

5. भरत हड़ताल. प्रेत का बयान. तीन एकांकी नाटक. बताओ मुझे कवियों से आदि रचनाएं ही नाट्य विधा की है। आप 'बताओ मुझे कवियों से' का ही विशेष रूप से आधार बनाएं। आपके द्वारा उल्लेखित अन्य रचनाएँ नाटक नहीं है। वे निबंध-कहानी आदि रूपों की रचनाएं है।

यदि और कोई अड़चन, जानकारी संबंधी भी हो तो पत्र-फोन से संपर्क किया जा सकता है।

सब से यथा योग्य।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संदर्भ ग्रंथ-सूची

आधार ग्रंथ

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्र.संस्करण	प्रकाशन
1	पुणतांबेकर (डॉ.) शंकर	बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ	1972	पुस्तक संस्थान, कानपुर

संदर्भ ग्रंथ

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्र.संस्करण	प्रकाशन
2	खन्ना (डॉ.) सरोज	हिंदी कविता में हास्य रस	1969	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3	गर्ग (डॉ.) शेरजंग	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में व्यंग्य	1973	साहित्यभारती प्रकाशन, दिल्ली
4	गुलाबराय (डॉ.)	सिद्धांत और अध्ययन	1975	आत्माराम प्रकाशन, दिल्ली
5	गोविंददास (सं.)	श्रेष्ठ हिंदी एकांकी	-	एस्.चंद एंड कंपनी, नई दिल्ली
6	चतुर्वेदी (डॉ.) बरसानेलाल	हिंदी साहित्य में हास्य रस	1963	हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली-6, पटना-4
7	चिपलूनकर (डॉ.) स्मिता	हिंदी के प्रमुख व्यंग्यकार	2001	अलका प्रकाशन, रामादेवी, कानपुर-208 007
8	तिवारी (डॉ.) बालेंदु शेखर	हिंदी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य	1978	अन्नपूर्णा प्रकाशन, गांधीनगर, कानपुर - 208 012
9	तिवारी (डॉ.) बालेंदु शेखर	व्यंग्य चिंतना और शंकर पुणतांबेकर	2002	नीरज बुक सेंटर, पटपड़गंज, दिल्ली-92

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्र.संस्करण	प्रकाशन
10	तिवारी (डॉ.) रमेश	हिंदी - एकांकी स्वरूप एवं विश्लेषण	1973	स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद
11	दुबे (डॉ.) हरिशंकर	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य में व्यंग्य	1997	विकास प्रकाशन, कानपुर - 208 027
12	देसाई (डॉ.) बापूराव	हिंदी व्यंग्य विधा : शास्त्र और इतिहास	1990	चिंतन प्रकाशन, कानपुर।
13	देसाई (डॉ.) बापूराव	हिंदी व्यंग्य एवं व्यंग्यकार	1997	विनय प्रकाशन, कानपुर।
14	परसाई हरिशंकर	रानी नागफणी की कहानी	1990	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली - 2
15	मिश्र (डॉ.) शशि	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य निबंध	1992	संकल्प प्रकाशन, मुलुंड (पश्चिम), मुंबई - 400 082
16	यादव (डॉ.) द्विजराम	मोहन राकेश के नाटक	1980	साहित्यालोक 104,ए/227,पी.रोड, कानपुर-208 012
17	राकेश मोहन	रात बीतने तक तथा अन्य ध्वनि नाटक	1974	राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
18	राकेश मोहन	अंडे के छिलके, अन्य एकांकी तथा बीज नाटक	1993	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि., 2/38, अंसारी मार्ग,दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
19	रेड्डी (डॉ.) ए.एन्. चंद्रशेखर	हिंदी व्यंग्य साहित्य	1989	शबरी संस्थान, शाहदरा, दिल्ली - 110 032

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्र.संस्करण	प्रकाशन
20	श्रीकृष्ण-अरुण मनमोहन सरल (सं.)	प्रतिनिधि हास्य एकांकी	1993	आत्माराम एंड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली - 6
21	सिंह (डॉ.) सत्यव्रत	श्रीविश्वनाथकविराजप्रणित: साहित्यदर्पण:	पंचम संस्करण	चौखंबा विद्याभवन, पो.बॉ.नं. 69, वाराणसी-221 001

हिंदी शब्दकोश

अ.क्र.	संपादक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्र.संस्करण	प्रकाशन
22	(सं.) जोशी श्रीपाद	अभिनव शब्दकोश	2005	प्रगति बुक्स प्रा.लि. जोगेश्वरी मंदिर मार्ग, पुणे-2
23	(सं.) तिवारी भोलानाथ	हिंदी उच्चारण कोश	1985	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110 002
24	(सं.) दास श्यामसुंदर	हिंदी शब्द सागर (भाग-2)	1967	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
25	(सं.) दास श्यामसुंदर	हिंदी शब्द सागर (भाग-9)	1970	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
26	(सं.) नवल जी	नालंदा विशाल शब्द सागर	2003	आदीश बुक डिपो, 7ए/29, डब्ल्यू.इ.ए., करोली बाग, नई दिल्ली-110 005
27	(सं.) वर्मा धीरेंद्र एवं अन्य	हिंदी साहित्य कोश, भाग-1 (पारिभाषिक शब्दावली)	1985	ज्ञानमंडल लि., संत कबीर रोड, वाराणसी-1
28	(सं.) वर्मा रामचंद्र	मानक हिंदी कोश (पहला खंड)	-	हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग

अ.क्र.	संपादक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्र.संस्करण	प्रकाशन
29	(सं.) वर्मा रामचंद्र	मानक हिंदी कोश (चौथा खंड)	1965	हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग
30	(सं.) वर्मा रामचंद्र	मानक हिंदी कोश (पाँचवाँ खंड)	1966	हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग
31	(सं.) राजा राधाकांतदेव	शब्दकल्पद्रुम: (चतुर्थो भाग)	सं.2024 वि.	चौखंबा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी-1

सहायक ग्रंथ-सूची

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्र.संस्करण	प्रकाशन
32	गुप्ते (डॉ.) विलास	आधुनिक हिंदी साहित्य को अहिंदी लेखकों का योगदान	1973	नवमीत प्रकाशन, दादर, मुंबई - 14
33	चतुर्वेदी (डॉ.) बरसानेलाल	हास्य की प्रवृत्तियाँ	1965	राज्यश्री प्रकाशन, मथुरा
34	देसाई (डॉ.) बापूराव	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य निबंध एवं निबंधकार	1987	चिंतन प्रकाशन, नौबस्ता, कानपुर-208 021
35	परसाई (डॉ.) हरिशंकर	रानी नागफणी की कहानी	1990	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-2
36	पुणतांबेकर (डॉ.) शंकर	पतनजली	1996	विकास प्रकाशन, बर्रा-कानपुर-27

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्र.संस्करण	प्रकाशन
37	पेडणेकर शरयू तथा पेडणेकर आ.ना.	राग दरबारी (रूपांतरीत नाट्य-रचना का मराठी अनुवाद)	1981	यत्न प्रकाशन, अलिबाग-रायगड
38	सोलंकी (डॉ.) कोमलसिंह	प्रतिनिधि एकांकी संकलन	-	रवींद्र प्रकाशन पाटनकर बजार, ग्वालियर-1

❑❑❑❑